Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 6 (2022) pp: 41-43
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

भगत सिंह : क्रांति के बुलंद व्यक्तित्व

डा. रविता रानी
शोधार्थी इतिहास
15 बी.पी.एस.एम.वी, खानपुर कलां

***R**eceived 22 May, 2022; **R**evised 02 June, 2022; **A**ccepted 04 June, 2022 © The author(s) 2022.*
P**ublished with open access at **www.questjournals.org

प्रस्तावना

भगत सिंह भारत के महान् क्रांन्तिकारी व्यक्तित्व थे, जिन्होनें ब्रिटिश अधिपत्य के उत्तरार्ध में ब्रिटिश सरकार को वैचारिक मंथन करने के लिए विवश कर दिया था। उनकी भारतीय पूर्ण स्वतन्त्रता की जिज्ञासा एवं प्रबल क्रांतिकारी सहभागिता से अनेकों भारतीय आजादी के लिए आन्दोलन में कूद पड़े थे। राष्ट्र की पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए उन्होनें अपने व्यक्तिगत हर स्वप्न को न्यौछावर कर दिया था। उनका एक ही स्वप्न था 'इनकलाब' (राज्य क्रांति)। उस समय के मशहूर शायर हसतर मोहानी द्वारा आजदी–ए–कामिल (पूर्ण आजादी) की बात करते हुए एक जलसे में 'इनकलाब जिन्दाबाद' (क्रान्ति की जय हो) का नारा दिया गया। भगत सिंह एवं उनके सभी क्रान्तिकारी साथियों द्वारा बुलंदता से यह नारा लगाया जाता था। इस नारे की बुलंदता इतनी थी कि अंग्रेज कांप जाया करते थे। उन्होनें एवं उनके साथियों ने जिस बहादुरी का परिचय दिया शायद ही कोई दे पाता हो।

भगत सिंह, राजगुरू एवं सुखदेव वो मिशाल थे जिन्होनें ब्रिटिश सरकार के आगे झुकना नहीं सहर्ष बलिदान देना स्वीकार किया था। **8 अप्रैल 1929** दिल्ली असेम्बली में रिक्त जगह देखकर बम फोड़ने की घटना के संदर्भ में निर्दोष होते हुए भी **23 मार्च 1931** को उन्हें फांसी की सजा दी गई। स्वतन्त्रता के इतिहास में क्रान्ति का एक नूतन अध्याय इस दिन जोड़ा गया। अनेकों–अनेक क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता के पथ पर अग्रेषित हुए। इस शोध पत्र में भगत सिंह : बुलंद व्यक्तित्व को समझने का विनम्र प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उद्धेश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयास किया गया है–

1. **भगत सिंह के बुलंद व्यक्तित्व को समझना।**
2. **उनके व्यक्तित्व के बारे में विश्लेषण करना।**

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र इतिहास लेखन के नियमों के अनुसार पूर्णतः गहनता एवं वैज्ञानिकता पर आधारित है। इसमें सहुलियत एवं नियतांश प्रतिचयन का प्रयोग किया गया है। तत्पश्चात् बड़ी सावधानियों सहित अपनी स्थापनाओं का निर्माण किया गया है। शोध पत्र का उद्धेश्य प्रस्तुत विषय पर अन्तिम सत्य के निष्कर्ष तक पहुंचना ही नहीं है अपितु कुछ नए तथ्यों को नूतन दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करना है।

विवरण

जन्म एवं शिक्षा

भगत सिंह का जन्म **28 सितम्बर 1907** ई. में पंजाब (पाकिस्तान) के लायपुर जिले के बंगा नामक गांव में माता विद्यावती कौर एवं पिता सरदार किशन सिंह के घर एक देशभक्त राष्ट्रवादी किसान परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा गांव के स्कूल से आरम्भ की गई। परंतु कुछ समय पश्चात उनको डी.ए.वी. लाहौर स्कूल में प्रवेश दिलाया गया। तत्पश्चात वे 1921 में नेशनल कॉलेज लाहौर में प्रविष्ट हुए, यहीं पर वे भारत के क्रान्तिकारियों के संपर्क में आए और सक्रियता से क्रान्तिकारी गतिविधियों में सम्मिलित हो गए। यद्यपि इनका परिवार क्रान्तिकारी की मिशाल था।[1] उनके चाचा अजीत सिंह के बारे में उस समय के कवि **बालमुकुन्द गुप्त** ने अपनी कविता में इस प्रकार वर्णित किया–

''सबके सब पंजाबी अब हैं लायल्टी में चकनाचूर।
सारा ही पंजाब देश बन जाने को है लायलपुर।।
ऐरा गैरा नत्थु खैरा, सब पर इसकी मस्ती है।
लायल्टी लाहौर शहर में भूसे से भी सस्ती है।।
केवल दो डिसलायल थे, एक लाजपत एक अजीत।

दोनों गए निकाले उनसे नहीं किसी को कुछ प्रीत।।[2]

राष्ट्रवादी परिवार में जन्में भगत सिंह पर क्रान्तिकारियों का अत्याधिक प्रभाव हुआ। इसी संदर्भ में उन्होनें फ्रांस की क्रान्ति, रूस की क्रान्ति, नैपोलियत एवं जर्मनी तथा इटली के राष्ट्रवादियों का गहनता से अध्ययन किया था।

क्रान्तिकारी गतिविधियाँ

जलियांवाला बाग हत्याकांड भारतीय इतिहास का काला अध्याय है। जिसमें **13 अप्रैल 1919** में जनरल रेजिनाल्ड एडवर्ड डायर के नेतृत्व में निहत्थे भारतीयों पर गोलियां चलाई गई। उस समय भगत सिंह मात्र 12 वर्ष के थे। तब भी इस घटना ने उनके विचारों पर गहरा प्रभाव डाला था।[3] यह उनके बचपन की वह घटना थी जिसने उनको झाकझोर दिया था। **5 फरवरी 1922** ई. में चौरी–चौरा हत्याकांड, असहयोग आन्दोलन के प्रदर्शनकारियों का एक बड़ा समूह पुलिस कर्मियों से भीड़ गया, जिसमें 22 पुलिस कर्मियों की मृत्यु हो गई। इस घटना से महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया एवं किसानों का साथ नहीं दिया और भगत सिंह इस घटना से बहुत निराश हुए। तत्पश्चात उनका अहिंसात्मक विश्वास का मार्ग सशस्त्र क्रान्ति की ओर मुड़ गया था।[4]

1926 ई. में भगत सिंह ने नवयुवकों को संगठित कर **'नौजवान भारत सभा'** की स्थापना क्रान्तिकारी विरासत को पुनर्जागृत करने के लिए की। तत्पश्चात 1928 ई. में उन्होनें **'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशनों** स्थापना की ताकि औपनिवेशिकता को उखाड़कर वास्तविक समाजवाद की स्थापना की जा सके। उनकी क्रान्ति समानतापूर्ण सामाजिक ढाँचे के निर्माण की क्रान्ति थी। 1930 ई. में उन्होनें अनुमानित कर कहा था कि कांग्रेस की लड़ाई का अन्त समझौते के रूप में होगा।[5]

1928 ई. में **साइमन कमीशन** के विरूद्ध प्रदर्शन में लाठी चार्ज से लाला लाजपतराय को घायल कर दिया गया। जिससे **17 नवम्बर 1928** को उनका देहावसान हो गया। साण्डर्स को गोली मारकर लाला लाजपतराय की मौत का बदला से लिया गया।[6] यद्यपि भगत सिंह कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों के अनुसार समाजवाद के पक्षधर थे। वे रक्तपात के पक्षधर बिल्कुल नहीं थे परन्तु औपनिवेशक शोषण नीतियों के अत्याचारों के विरूद्ध उनका विरोध स्वाभाविक था। **8 अप्रैल 1929** को केन्द्रीय असेम्बली में रिक्त स्थान देखकर उनके व साथियों के द्वारा बम फेंका गया। वास्तव में वे बिना रक्तपात किए अंग्रेजों को 'भारतीय आवाज' पहुंचाना चाहते थे। बम फटने के पश्चात उन्होनें **'इंकलाब–जिन्दाबाद', साम्राज्यवाद–मुर्दाबाद' (क्रान्ति की जय हो, साम्राज्यवाद का नाश हो)** का नारा लगाया एवं अपने साथ लाए गए पर्चों को वहीं खड़े खड़े हवा में उछाल दिया और यहीं से उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

भगत सिंह लगभग 2 वर्ष जेल में रहे। यहां भी अपना अध्ययन जारी रखा एवं अपने क्रान्तिकारी विचार व्यक्त करते थे। उनके द्वारा लिखे गए पत्र उनके बुलंद व्यक्तित्व का दर्पण हैं। मजदूरों का शोषण करने वालों को उन्होनें अपना शत्रु माना है चाहे वह भारतीय ही क्यों न हो। उन्होनें जेल में एक लेख लिखा जिसका शीर्षक था मैं नास्तिक क्यों हूं! यहां उन्होनें 64 दिनों की भूखहड़ताल की, जिसमें उनके क्रान्तिकारी साथी यतीन्द्रनाथ दास के प्राण चले गए थे। 26 अगस्त 1930 को भारतीय दण्ड संहिता की धारा 129, 32 एवं विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 4 और 6 एफ और धारा 120 के अंतर्गत अपराधी सिद्ध कर 64 पृष्ठों का निर्णय **7 अक्तूबर 1930** को अदालत द्वारा दिया गया। इसके साथ ही लाहौर में धारा 144 लगा दी गई थी।

अन्ततः **23 मार्च 1931** शाम 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह, राजगुरू एवं सुखदेव को फांसी दी गई। फांसी पर जाने से पहले वे लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे। आखिरी इच्छा पूछी जाने पर उन्होनें यह जीवनी पूरी करने के लिए कहा। फांसी के वक्त की सूचना पर उन्होनें किताब छत की और उछाली और बोले– 'ठीक है अब चलो'।
फांसी पर जाते समय उन्होनें मस्ती में गाया था–

''मेरा रंग दे बसंती चोला मेरा रंग दे।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला, माय रंग दे बसन्ती चोला।।

जो ब्रिटिश सत्ता अपनी हुकुमत की जड़ों को बहुत गहरी माने हुए थे वह इस कदर कांप जाएगी सोचा नहीं था।
यह सरकार फांसी के पश्चात आन्दोलनों से डर गई और इसी डर में उन महान क्रान्तिकारियों के मृत शरीर के टुकड़े कर बोरियों में भरकर फिरोजपुर की ओर ले गए। मृत शरीर पर घी डालने के स्थान पर मिट्टी का तेल डाला गया। जब गांव वाले आग जलती देख उनकी तरफ बढ़े तो डर के मारे अंग्रेजों ने उनके मृत शरीर के अर्ध जले टुकड़े सतलुज नदी में फेंक दिए। ग्रामीणों द्वारा ही उनके शवों का विधिवत दाह संस्कार किया गया।[7] इस प्रकार से उनके मृत व्यक्तित्व से भी अंग्रेज हुकुमत घबरा गई थी। 12 वर्ष के भगत सिंह की मनोस्थिति भिन्न थी जो उस समय हिंसा को उपयुक्त नहीं मानता है। इसी बाल–मनोस्थिति के उन पर दुरगामी प्रभाव पड़े।

*Corresponding Author: डा. रविता रानी

निष्कर्ष

भगत सिंह के जन्म के समय भारत औपनिवेशिक पराधीनता का शिकार था। भारतीयों में राष्ट्रीय भावना लगभग नाममात्र थी। जिस दौर में भगत सिंह के व्यक्तित्व का पदार्पण हुआ उस समय भारत अहिंसा एवं क्रान्ति दो विचारों पर अग्रेषित था। एक ऐसा साम्राज्यवाद जिसका पूरा दुनिया के बहुत बड़े हिस्से पर अधिपत्य था। 23 साल के राष्ट्रवादी क्रान्तिकारी युवा से भयभीत हो गया। उनकी शहादत के पश्चात लाहौर के दैनिक ट्रिब्यून और न्यूयार्क के एक पत्र डेली वर्कर ने उनकी शहादत को छापा था। इनके पश्चात भी मार्क्सवादी पत्रों ने उन पर लेख छापे। दक्षिण भारत के परियार ने उनके लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूं?' पर साप्ताहिक पत्र कुडई आरसू के 22–29 मार्च 1931 के अंक में तमिल में सम्पादकीय लिखा। इसमें उसकी शहादत को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ऊपर जीत के रूप में देखा गया एवं प्रशंसा की गई थी। उनके द्वारा बुलंदता से बोला जाने वाला नारा 'इनकलाब जिन्दाबाद' (क्रान्ति की जय हो) मात्र नारा नहीं था। समस्त स्वप्नों की लाश पर खड़ा किया गया 'राज्य परिवर्तन का महल' था। वह था– **'इनकलाब जिन्दाबाद, साम्राज्याद मुर्दाबाद'।**

भगत सिंह एवं उनके साथियों ने राष्ट्र के लिए जिस बहादुरी का परिचय दिया शायद ही कोई दे पाता हो। ये बहादुरी की वो मिशाल थे जिन्होनें झुकने की बजाय सहर्ष बलिदान देना स्वीकार किया था। उनके विचार उनका व्यक्तित्व एवं उनका क्रान्तिकारी मार्ग राष्ट्र के गर्व का स्त्रोत हैं।

संदर्भ स्त्रोत

1. भगत सिह विकिपीडिया
   https://hi.m.wikipedia.org>wiki
2. रानी, रविता. (2019). ***भक्त फूल सिंह नारी गुरूकुल शिक्षा पद्धति : एक अध्ययन***, शोध प्रबंध, एन.आई.आई.एल.एम. विश्वविद्यालय, कैथल, पृ. 18.
3. ***जलियांवाला बाग हत्याकांड*** विकिपीडिया
   https://hi.wikipedia.org/wiki/
4. ***चौरी चौरा हत्याकांड*** विकिपीडिया
   https://hi.wikipedia.org/wiki/
5. ***नौजवान भारत सभा*** विकिपीडिया
   https://en.wikipedia.org/wiki/Naujawan_Bharat_Sabha
6. ***साइमन कमीशन*** विकिपीडिया
7. भगत सिंह, पूर्व उद्धृत विकिपीडिया

*Corresponding Author: डा. रविता रानी